



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति शिक्षा के तत्वों का अध्ययन

डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय¹
अमृता शर्मा²

1. डीन, शिक्षा संकाय, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
1. शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

शोध सार—

वर्तमान समय में अशांति दुःख आदि विकार व्याप्त है, ऐसे में शांति के सागर परमात्मा से आत्मसात कर धर्म और शाश्वत सत्य को स्वीकार करने की परमावश्यकता है और धन-दौलत से संसाधन खरीदे जा सकते हैं परंतु शांति नहीं। श्रीमद्भगवद् गीता वर्तमान में भी उतनी प्रासंगिक है जितनी हजारों वर्षों पहले थी। अतः शोधकर्त्री प्रस्तुत शोध के माध्यम से 'श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति शिक्षा के तत्वों का अध्ययन' कर निष्कर्ष प्राप्त किये हैं। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति तत्वों की पहचान करना। श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति तत्वों जैसे— स्थिरप्रज्ञ, शांति, निष्काम कर्म, भय, क्रोध, निष्काम-सकाम कर्म, का अध्ययन करना। श्रीमद् भगवद्गीता का अध्ययन करने पर पाया कि श्रीमद् भगवद्गीता में अनेक स्थानों पर शांति तत्व दिये गये हैं। श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति तत्वों— स्थिरप्रज्ञ, शांति, निष्काम कर्म, भय, क्रोध, निष्काम-सकाम कर्म आदि के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। जिन्हें जानकर व्यक्ति शांति स्थापित कर सकता है।

विशिष्ट शब्द— श्रीमद् भगवद्गीता, शांति शिक्षा

भूमिका—

शांति शिक्षा मानव जाति के अस्तित्व, विकास एवं प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। युद्ध या युद्ध का भय विकास के प्रति साधनों को शांतिपूर्ण उपयोग से हटाकर युद्ध या युद्ध की तैयारियों के लिए मोड़ देता है। मानव इतिहास के रक्त रंजित पृष्ठ युद्ध की भयानकता व विनाशकता के जीवन्त उदाहरण है। जब-जब मानवता युद्ध से त्रस्त हुई तब-तब शांति की अधिकतम आवश्यकता अनुभव की गई। प्रथम विश्व युद्ध की वीभत्सना को दृष्टिगत रखते हुए युद्ध टालने में व शांति बनाये रखने हेतु 'लीग ऑफ नेशन्स' की स्थापना हुई, लेकिन युद्ध संकट टालने में यह व्यवस्था असफल रही और शांति स्थापना एवं परस्पर विवादों के हल हेतु 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की स्थापना की गई। संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों में विश्व शांति एवं सुरक्षा को कायम रखना और शांति के लिए उत्पन्न खतरों को सामूहिक सुरक्षा द्वारा रोकना प्रमुख है।

शांति का केन्द्र मानवीय मस्तिष्क है इसलिए अंतिम रूप से शांति व्यक्ति को अनुभव होनी चाहिए। जब व्यक्ति शांति की अवस्था में होगा जब वह केवल अवरोधों एवं तनावों से ही स्वतंत्र नहीं होगा बल्कि भावात्मक रूप से संतुष्ट व आनन्द का भी अनुभव करेगा।

वर्तमान में शांति शिक्षा, युद्ध की समस्या तथा राजनैतिक संघर्षों के अध्ययन तक ही सीमित है। शांति की नवीन परिभाषा के अनुसार, युद्ध या हिंसा, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों में सतत विद्यमान है। कुविकास, गरीबी, आन्तरिक हिंसा और युद्ध में एक निकट संबंध देखा जा सकता है। इसलिए युद्ध विरोधी साधनों का विकास व खोज आवश्यक है। इन युद्ध विरोधी साधनों का उद्देश्य केवल युद्ध और हिंसा का समाप्त करना ही नहीं है बल्कि सभी प्रकार के शोषण को समाप्त करना है। शांति शिक्षा का आन्दोलन वस्तुतः सम्पूर्ण व मूलभूत परिवर्तन का है। अहिंसा, हिंसा का विरोध मात्र नहीं बल्कि परिवर्तन की सम्पूर्ण शक्ति है। इसलिए शांति शिक्षा का विचार नवीन समाज की उत्पत्ति या निर्माण है।

वर्तमान समय में अशांति दुःख आदि विकार व्याप्त है, ऐसे में शांति के सागर परमात्मा से आत्मसात कर धर्म और शाश्वत सत्य को स्वीकार करने की परमावश्यकता है और धन-दौलत से संसाधन खरीदे जा सकते हैं परंतु शांति नहीं। श्रीमद्भगवद् गीता वर्तमान में भी उतनी प्रासंगिक है जितनी हजारों वर्षों पहले थी। श्रीकृष्ण के कथन मनुष्य के साक्षात्कार में सहायक है उन्होंने कहा— "जब मन अशांत है तो नियंत्रित करना कठिन है, परंतु अभ्यास से इसे वश में किया जा सकता है।"

मन की चंचलता जब तक है तब तक मन अशांत ही बना ही रहता है अतः मन की शांति के लिए स्थिरता, धैर्य चिन्तन परम आवश्यक है। श्रीमद्भगवद् गीता में श्रीकृष्ण ने पथभ्रष्ट, अशांत मन, दुश्चिन्ता के शिकार एवं कर्तव्य विमुख अर्जुन को शांति पथ एवं कर्तव्य पथ पर प्रेरित (अग्रसर) होने के लिए अनेक महान उपदेश दिये जैसे— सदैव संदेह करने वाले व्यक्ति के लिए प्रसन्नता न इस लोक में है और न ही कहीं और उन्होंने कहा क्रोध और शांति दोनों ही एक-दूसरे के विपरितार्थक हैं। शांति चाहने वालों को क्रोध का और क्रोधी व्यक्ति को शांति का त्याग परमावश्यक है अतः मन की शांति एवं आत्म नियंत्रण पाने के लिए क्रोध को त्यागना ही पड़ता है।

श्रीकृष्ण ने श्रीमद् भगवद्गीता में निष्क्रियता का विरोध किया और कहा कि— "निष्क्रिय रहना अशांति का प्रतिक और महाघातक है, मन की अशांति, आन्तरिक द्वन्द, क्रोध, भय, दुश्चिन्ता आदि बुराईयों का प्रमुख कारण है। क्यों कि वास्तव में कार्य करना निष्क्रियता से बेहतर है।

श्रीमद् भगवद्गीता में श्रीकृष्ण को ज्ञान का और अर्जुन को कर्म का पुंज माना है। ज्ञान और कर्म का सम्मिश्रण स्वरूप ही अन्तःकरण में संस्कार एवं गुणों को धारण करता है। भगवान का अवतार समाज की परिस्थितियों के विषम होने पर होता है ऐसी स्थिति में ज्ञान की परमावश्यकता होती है, जिससे समाज की विपरित परिस्थितियों को समाज के अनुकूल बनाया जा सके। आज भी समाज में ठीक वैसी ही परिस्थितियां हैं। युवा अक्रोश दंग, फसाद छोटी-छोटी बातों को लेकर एक-दूसरे की हत्या करना आदि इस समय समाज में शांति, प्रेम, स्नेह, भाईचारे, संयम एवं सद्भावना की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

2. समस्या का औचित्य—

समाज के उच्च आदर्श एवं विकास हेतु समाज में व्याप्त बुराईयों जैसे— हिंसा, उपद्रव, कलह, अधिकार की मांग, युवाओं के मन में अशांति, बच्चों में बढ़ता असंतोष, वृद्धजनों की दयनीय स्थिति आदि को समाप्त करना और अच्छाईयों को अपना अति आवश्यक प्रतीत होता है। प्रतिदिन के झगड़े युवाओं का आक्रोश,

1. डीन, शिक्षा संकाय, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
2. शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

व्यक्तिवादी स्वार्थ, लालची दृष्टि, सहनशीलता का अभाव, बच्चों में बढ़ता असंतोष समाजों में उच्च एवं निम्न स्थितियों आदि के कारण हमारा मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। चोर से लेकर संत तक सभी अपनी स्वार्थ सिद्धि में ही निवृत्त हैं। सत्य, अहिंसा, शांति, जीवन के आदर्श मूल्यों, संस्कृति आदि को सभी जानते हुए अनदेखा कर रहे हैं।

छोटी-छोटी बातों को लेकर युवा व्यक्ति इतना आक्रोश करते हैं कि उन्हें संयम और धैर्यशीलता की अपेक्षा मृत्यु ही दिखाई देती है। समाज में बच्चों की स्थिति एवं स्त्रियों की शोचनीय स्थिति है, बच्चों में संतोष, प्रेम, आदर, समायोजन का पूर्णतः अभाव है और प्रतिदिन बालिकाओं के सामूहिक दुष्कर्म जैसी शर्मसार घटनाओं से मन विहल हो उठता है और ये सोचने पर विवश कर देता है कि आखिर इसका उचित समाधान क्या होगा? समाज में व्याप्त असमायोजन, असंयम, हिंसा, द्वेष, कलह, अधिकारों की मांग, युवाओं के मन की अशांति और बच्चों के भविष्य कैसे उज्ज्वल होगा? शांति शिक्षा कैसे विकसित हो? आदि प्रश्नों ने मुझे श्रीमद्भगवद् गीता में युद्ध में भी शांति खोजने के लिए प्रेरित किया है।

उपर्युक्त समस्याओं के उचित निवारण एवं सफल मार्गदर्शन के लिए श्रीमद् भगवद्गीता से श्रेष्ठ ग्रन्थ होना संभव नहीं है, क्योंकि श्रीमद् भगवद्गीता ही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है— जो युद्ध क्षेत्र में कहा गया है और दुश्चिंतित, कुठाग्रस्त, मोहग्रस्त अर्जुन की सम्पूर्ण दुविधाओं का अन्त कर अर्जुन को कर्म पथ पर आगे की ओर अग्रसर करता है। वर्तमान समय में भी यही ग्रन्थ उतना ही सफल है जितना उस समय अर्जुन के लिए था। आज का प्रत्येक व्यक्ति अर्जुन की ही भांति कर्तव्यपथ से दूर भाग रहा है तथा समस्याओं एवं चिन्ताओं से घिरा हुआ है, वर्तमान समय में पतित व्यक्ति के उत्थान हेतु श्रीकृष्ण तो नहीं हैं, परंतु उनकी मुखारविन्द से निकले अमर वचन (श्रीमद् भगवद्गीता) आज भी विद्यमान हैं जो पतित समाज को विकासोन्मुख मार्ग की ओर ले जाने में सफल हैं।

अतः शोधकर्त्री ने अनुभव किया है कि श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति तत्वों का अध्ययन किया जाए और यह ज्ञात किया कि इसका विकास कैसे किया जाए? शिक्षा से संबंधित विकास पथ पर समाज में प्रसार करने वाले विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक एवं शैक्षिक नीति निर्माताओं के लिए प्रस्तुत शोध लाभकारी सिद्ध होगा। ऐसा शोधकर्त्री का विश्वास है। अतः प्रस्तुत शोध पर अध्ययन करना औचित्यपूर्ण है।

3. समस्या कथन—

“श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति शिक्षा के तत्वों का अध्ययन”

4. शोध के उद्देश्य—

1. श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति तत्वों की पहचान करना।
2. श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति तत्वों जैसे— स्थिरप्रज्ञ, शांति, निष्काम कर्म, भय, क्रोध, निष्काम—सकाम कर्म का अध्ययन करना।

5. शोध की विधि—

प्रस्तुत शोध कार्य में **दार्शनिक शोध विधि** का प्रयोग किया गया है।

6. शोध की परिसीमाएँ—

प्रस्तुत शोध कार्य श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति शिक्षा के प्रमुख तत्वों स्थिरप्रज्ञ, शांति, निष्काम कर्म, भय, क्रोध, निष्काम—सकाम कर्म के अध्ययन तक ही सीमित है।

7. शोध से प्राप्त निष्कर्ष—

1. श्रीमद् भगवद्गीता का अध्ययन करने पर पाया कि श्रीमद् भगवद्गीता में अनेक स्थानों पर शांति तत्व दिये गये हैं।
2. श्रीमद् भगवद्गीता में निहित शांति तत्वों अध्ययन—
स्थिरप्रज्ञ— श्रीमद् भगवद्गीता के अनुसार जिस समय मनुष्य मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग देता है और आत्मा से आत्मा में ही सन्तुष्ट रहता है उस समय को ही स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।
शांति— गीता कहती है कि हमारे अन्दर ही अक्षय शांति और अक्षय प्रसन्नता का स्रोत विद्यमान है। वहाँ पहुँचने के लिए आवश्यक है कि मन को इन्द्रियों से हटाकर अन्दर की ओर ध्यान लगाया जाए।
निष्काम कर्म— श्रीमद् भगवद्गीता में श्रीकृष्ण निष्काम कर्मयोग का उपदेश देते हुए कहते हैं, जो सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि, जीत-हार, यश-अपयश, जीवन-मरण, भूत-भविष्य की चिन्ता न करके मात्र अपने कर्तव्य में लीन रहता है, यही सच्चा निष्काम कर्मयोग है।
भय— श्रीमद् भगवद्गीता में बताया गया है कि जो लोग दूसरों पर बिना वजह ही सन्देह करते हैं, वे कभी खुश नहीं रह सकते हैं और भयभीत रहते हैं।
क्रोध— जब किसी तीव्र इच्छा की पूर्ति में बाधा आती है तो क्रोध का जन्म होता है। यदि किसी मनुष्य को किसी से भी कुछ नहीं चाहिए तो उसे कभी क्रोध नहीं आएगा।
निष्काम—सकाम कर्म— गीता में भगवान् ने निष्काम कर्म पर ही बल दिया है। इसके परिणाम में सुख-दुःख की अनुभूति कराने वाली फलासक्ति नहीं होती है। कर्म करने में ही मानव का अधिकार है उसके फल में कभी नहीं। अतः कर्मफल को त्याग कर निष्काम भाव से किया गया कर्म मानव को पुण्य और पाप से नहीं बाँधता है। अतः मानव को निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए, कर्म का त्याग कभी नहीं करना चाहिए।
 श्रीमद् भगवद्गीता वर्तमान में धर्म से ज्यादा जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भक्तिवेदान्त ए. सी. (1991) : श्रीमद् भगवद्गीता यथारूप बी. वी. ट्रस्ट मुम्बई।
- स्वामी रामसुखदास (1997) : श्रीमद् भगवद्गीता भाषा टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर।
- शर्मा, एस. एन. (2000) : श्रीमद् भगवद्गीता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।
- स्वामी गम्भीरानन्द (1972) : अष्ट उपनिषद् प्रथम एवं द्वितीय संस्करण, अद्वैत आश्रम।
- यति, सी. एन. (1981) : भगवद् गीता विकास।
- शर्मा, एस. एन. (2004) : श्रीमद्भगवद् गीता के मनोसामाजिक एवं शैक्षिक आयाम।